RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
e-ISSN: 2455-3085 | Vol.06 | Iss.08 | August 2021 | pp. 4-6
Double-Blind Peer Reviewed/Refereed Journal

किन्नरों की मानसिक व्यथा : 'मैं पायल' उपन्यास के परिप्रेक्ष्य में

*डॉ.जिन्सी मैथ्यू

सरकारी अतिथि अध्यापिका, कैथोलिक्केट कॉलेज, पत्तनमतिट्टा

Abstract

आज का समय विमर्शों का समय है। बहुकेंद्रीय का समय है। स्त्री, दलित अल्पसंख्यक वृद्ध और आदिवासी समुदाय परिधि को छोडकर केन्द्र में आ चुके हैं और अपने मूलभूत मानवाधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे हैं। किन्नर समुदाय भी हाशियापरक ज़िन्दगी को छोडकर अपने अधिकारों केलिए लड रहा है। यह एक ऐसा समुदाय है जो समाज के बीचों बीच उपस्थित है लेकिन उसका कोई अस्तित्व नहीं। रामायण और महाभारत काल से ही समाज में इस समुदाय की उपस्थिति दर्ज है पर 'सभ्य समाज' में तिरस्कार और अपमान का दंश झेलने के लिए विवश है। किन्नर उपहास का पात्र बनते हैं। लेकिन उनका मज़ाक उडानेवाले उनकी पीडा को नहीं समझते।

Keywords: हिजड़ा, किन्नर, तृतीयलिंग, पितृसत्तामक, अस्तित्व, जिजीविषा।

Article Publication

Published Online: 17-Aug-2021

***Author's Correspondence**

डॉ.जिन्सी मैथ्यू

सरकारी अतिथि अध्यापिका, कैथोलिक्केट कॉलेज, पत्तनमतिट्टा

jincy4121987[at]gmail.com

10.31305/rrijm.2021.v06.i08.002

© 2021The Authors. Published by RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

प्रस्तावना

'किन्नर' हिमालय के क्षेत्रों में बसनेवाली एक मनुष्य जाति का नाम है, जिसके प्रधान केन्द्र हिमवत् और हेमकूट थे। पुराणों और महाभारत की कथाओं एवं आख्यानों में तो उनकी चर्चाएँ प्राप्त होती है। किन्नर ऐसे मानव को कहलाते हैं, जो लैंगिक रूप से न नर होते है न मादा। किन्तु आजकल लैंगिक विकलांग व्यक्तियों केलिए भी इस शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। इसे और कई नामों से संबोधित किया जाता है जैसे-हिजडा, छक्का, दरमियाना इत्यादि। इनका जन्म भी आम इन्सानों की ही तरह होता है किन्तु लौंगिक विकलांगता के चलते इन्हें समाज द्वारा हाशिये पर रखा गया था। जीवनयापन केलिए इनके पास बधाई मांगने के अलावा कोई उपाय नहीं है क्योंकि समाज और परिवार इन्हें अपनाने को तैयार नहीं।

'महेन्द्र भीष्म' जी द्वारा आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया उपन्यास है मैं पायल, प्रस्तुत कथा किन्नर गुरु पायल सिंह के जीवन की संघर्ष गाथा है। इसमें पायल सिंह के साथ-साथ किन्नरों द्वारा भोगे कटू यथार्थ का वास्तविक वर्णन है। इक्कीस अध्यायों में विभाजित प्रस्तुत उपन्यास में एक किन्नर को समाज में भोगने पडी सामाजिक सरोकारों का विस्तारपूर्वक विवरण दिया गया है। 'किन्नर' होने का एहसास सबसे पहले परिवार ही कराता है। बचपन में 'पायल' को इस शब्द का अर्थ पता नही था। लेकिन पिता द्वारा बार – बार हिजड़ कहकर सम्बोधन करना पायल को स्त्री और पुरुष से इतर होने का एहसास कराता था। जब पिताजी दारू के नशे में भी कोसते गाली देते, जिसका उल्लेख इस प्रकार है – "हिजडा यह शब्द सबसे पहले मेंने उन्हीं के मुख से सुना था, पर तब मैं इस शब्द के मायने से बिलकुल अनभिज्ञ थी जैसे करमजली, नास पीटी, हरामजादी आदि विशेषण जो भी मेरे लिए प्रयुक्त होते और जिनका भी मैं तब अर्थ नहीं जानती थी, बस इतना ही समझती थी कि 'हिजड़ा' भी गाली के रूप में प्रयोग में लाया जाने वाला कोई शब्द होगा।" [1] उस दिन से पायल ने समझ लिया है कि 'मैं एक हिजडा बच्चा हूँ' अपने साथ पिता द्वारा अमानवीय व्यवहार होता देख वह मानसिक रूप से कुंठित होकर घर से भाग जाने की तरकीब सोचती है और अंततः भाग जाती है।

अपने बच्चों केलिए प्यार और आत्मीयता पिता से अधिक माँ को दिखाई देती है। चाहे वह लडका हो या लडकी या फिर एक किन्नर ही क्यों न हो माँ केलिए तो सब एक समान होते है। पायल को किन्नर होने की वजह से परिवार में कम प्यार मिला लेकिन माँ शान्ति मानसिक तथा व्यवहारिक रूप से उनके करीब थी। उपन्यास में भीष्म जी ने समाज की सोच विचार की ओर अपना आवाज़ उडाया है कि लोग क्यों हर बार भूल जाते है कि हिजडा भी मनुष्य है, उनके साथ जानवरों जैसा बर्ताव क्यों किया जाता है? पिता द्वारा बेटी पायल का फ्रॉंक फाड दिए जाना, बालों की चोटी नोचकर लात-धुस्सों से पिटाई करना, शरीर से सारे कपडे हटाकर पानी के टब में डुबोकर चप्पलों से पीटना तथा नग्न अवस्थ में उसे फांसी पर लटकाकर जान से मारने का प्रयास करना इन कुकृप्यों से अनुमान लगाया जा सकता है कि परिवार में एक किन्नर बच्चे का होना कितना कलंकित था। 'पायल' एक किन्नर है इसमें उसका क्या दोष है? यदि समाज के नज़रिए से पायल दोषी है तो, उनके साथ उनके माँ – बाप भी दोषी है? फिर उनके साथ ऐसा दुर्व्यवहार क्यों?

पायल ने अपने पिता की असहनीय मार और तकलीफ को सहन किया तो वही समाज के कष्टों को भी झेला। 'हिजडा' शब्द एक दिन पायल को घर से भागने को मज़बूर कर देता है। वह स्वयं का विनाश करने का मन बनाती है 'न रहेगी वह हिजडा न रहेंगे वे ताने जो मुझे और मेरे कारण मेरे परिवार को मिल रहे थे।' इससे स्पष्ट होता है एक किन्नर का जीवन कितना कष्टदायक होता है। वह अपने परिवार केलिए कुएँ में छलांग लगाने का तथा रेलवे लाइन पर गाडी के आगे कूदकर जान देने का विचार करती है, लेकिन संभव नहीं हुआ।

किन्नर ही नही, घर की चारदीवारी लांघने के बाद बाहर की दुनिया में सांस लेना यदि स्त्री चाहती है तो इनके लिए पग – पग पर विपदाएं खडी हो जाती है। स्त्री की गंध का पता चलती ही देह के नरभक्षी भेडिये उसके सामने हाजिर हो जाते है। वे यह भी नहीं देखते हैं कि आगे दिखनेवाली लडकी किसी के बेटी, बहन, माँ पत्नी या हिजडा, उन्हें तो बस अपनी शरीरिक भूख मिटाने से मतलब होता है। पायल घर से भागकर जब ट्रेन से अकेले सफर करने लगती है तब उस खाली डिब्बे में बैठे वृद्ध व्यक्ति कम उम्र की पायल को रूपयों का लालच देकर अपनी शारीरिक भूख मिटाने केलिए ज़ोर जबरदस्ती करने की कोशिश करने लगता है। "मेरी ओर उसने बीस रूपये का नोट बढ़ाते कहा ले रख ले और बाथरूम में आ जाना। इतना कह वह बाथरूम की ओर इशारा कर चले गया...... कुछ देर बाद ही वह आया और मेरे पास सटकर बैठ गया। मुझे ठेलते हुए बोला, क्यों री तू आयी नहीं ले पचास का पकड आ जल्दी।"[2] एक तरह किन्नर (पायल) को कलंक माना था तो दूसर ओर पुरुष किन्नर के साथ अपना भूख मिटान चाहता है तब कलंक समाज और परिवार को नज़र नहीं आती। वहाँ से वह बच जाती है ट्रेन की यात्रा करके दूसरे प्लेटफाम पर पहुँचती है और रात में पायल को अकेला पाकर वहाँ का हवलदार उसके साथ शारीरिक संबन्ध बनाना चाहता है। लेकिन वह अपने आप को उस भेडियें की चंगुल से बच लेती है। घर से बिछुडे पायल को हर तरफ की तकलीफें झेलनी पडी। भूख – प्यास से पीडित थी, कभी भिखारियों के साथ, तो कभी किसी के सामने हाथ फैलाकर, चाय की दुकान पर रहकर तो कभी कैंटीन में रहकर अपनी भूख मिटाती है। पायल अपने जीवन में आगे बढ़ने केलिए, समाज में खुद की अपनी पहचान बनाने केलिए वह संतोष सिंह के अप्सरा टॉकीज में काम शुरु करती है। लेकिन वहाँ का चौकीदार प्रमोद पायल के साथ दुरव्यवहार करता है। इसी कारण वह कैंटीन का काम छोड़ती है। किन्नर होने पर पीलैदादा द्वारा पायल को सरे आम, बीच बाजार में निर्वस्त्र कर पीटना। इन सारी घटनाओं से हमारे सामने समाज में किन्नरों की क्या अवस्था है इसका पूरा परिचय प्रस्तुत उपन्यास के द्वारा भीष्म जी ने किया है। एक दिन गिरोह की दल में पायल फंस जाती है। रेलवे स्टेशन पर पायल को अकेला पाकर गिरोह के एक आदमी ने उसे बहला – फुसलाकर काम का लालच देकर अपना संग ले गया। लेकिन उन लोगों ने पायल को काम की बजाय भीख मंगाने पर मजबूर कर दिया। "दूसरे बच्चों की तरह मुझसे भी भीख मगाई जाने लगी। मैं कही भाग न सकूँ इसलिए गिरोह के लोगों की नज़र मुझ पर बराबर रहती थी। यह स्थिति अन्य बच्चों की भी थी। ज्यादातर बच्चे अपने घर – परिवार वालों से तंग आकर इस दल में आ फंसे थे। घर से भागने की उन सभी के पास अपनी – अपनी वजहें थी। पर उनमें मेरी तरह एक भी न था, जो हिजडा होने के कारण अपने पिता की नफरत और मार से बचने केलिए घर से भाग हो। भागी तो थी मरने के लिए पर मुझे क्या पता था कि मैं इस नरक में आकर ऐसी बद से बदतर स्थिति को प्राप्त हो जाउंगी।"[3]

एकदिन लखनऊ के कुछ किन्नर पायल का अपहरण कर लेते हैं और उसे एक कमरे में बन्द कर देते हैं, जहाँ अन्य किन्नर और उनकी गुरुमाई पायल की विवश करते हैं कि वह भी अन्य किन्नरों की भांति बधाई गाने केलिए उनके साथ जाये। किन्तु पायल जब इस कार्य के लिए तैयार नहीं होती तो उसे मारा – पीटा भी जाता है और कई दिनों तक भूखा भी रखा जाता है, जिसका विवरण उपन्यास में पायल के द्वारा इस प्रकार दिया जाता है – "मैं एक छोटे कमरे में कैद कर दी गयी थी। एक व्यक्ति इस जीवन में अपने अनुसार स्वतंत्र जी नहीं सकता क्या? मुझे मालूम है कि मैं एक किन्नर हूँ, तो क्या किन्नर होना अपराध है, जो उसे उसके स्वभाव के विपरीत कार्य करने केलिए विवश किया जा रहा है। क्या एक किन्नर को बधाई टोली के अलावा अन्य कार्य – दायित्व नहीं सौंपे जा सकते। मैं टॉकीज में प्रोजेक्टर चलाती हूँ। उसके पहले अन्य छोटे – मोटे कार्य भी मैंने किये है, फिर मुझे क्यों बाध्य किया जा रहा है कि मैं इनकी तरह ताली पीटूँ ढोलक बजाऊँ, नाचूँ और बधाई गाऊँ।"[4]

किन्नर भी इन्सान ही है वे भी एक इन्सान की ही भांति रक्त मांस और अस्थि का पिंजर लिए प्रकृति में आते है। सिर्फ एक कमी लैंगिक विक्कलांगता के चलते हमारा समाज इनसे दूरी बना लेता है। समाज और परिवार के द्वारा किये गये अपमान को किन्नर अन्तर ही अन्तर कोसते हुए ईश्वर द्वारा निर्मित इस सृष्टि पर प्रश्न चिन्ह खडा करने नजर आते है। 'पायल' जी भी अपने एकांत क्षणों में ईश्वर से इस प्रश्न का उत्तर मांगती हुई नजर आती है – "मैं हृदय में बहुत कुछ जज्ब किये मन ही मत रोती रहती थी और ईश्वर से एकांत के क्षणों में अपने अपराध केलिए पूछता रहती थी, हे ईश्वर। ऐसा कौन सा पाप मैंने किया जो तूने मुझे इस जीवन में हिजड़ा रूप दिया।"[5]

महेन्द्र भीष्म जी का 'मैं पायल' उपन्यास यातना, संघर्ष जिजीविषा की अनवरत यात्रा है। उपन्यास के माध्यम से हमें सिर्फ पायल की समस्याएँ देखने को नहीं मिलती है बल्कि इसमें भारत के सभी तृतीयलिंगी औलाद के प्रति एक माँ की ममता और पिता का पितृसत्तामक आक्रोश देखने को भी मिलती है। अगर पायल जी को बचपन में ही अच्छासमाज, अच्छे पिता, अच्छे भाई मिलते तो कितना अच्छा होता। एक किन्नर का कानपुर के अप्सरा टॉकीज के कैंटीन में चाय समोसा बनाने काम करना हो या पूनम टॉकीज में प्रोजेक्ट चलाना या फिर लखनऊ में अकैस्ट्रा का काम करना, पायल ने यह साबित कर दिखाया था कि सामान्य लोगों की भांति सारे काम वर कर सकती है। इनमें भी सामान्य लोगों की तरह प्रतिभा और शक्ति होती है। लेकिन समाज उन्हें करने नहीं देता। उन्हें उपहास का पात्र बनाते हैं। लेखक ने किन्नरों के दुःख को महसूस कर उनकी समस्याओं को समाज के सामने लाने का सफलतम प्रयास किया है साथ ही समाज में फैली बुराईयों को दूर कर एक नये समाज के निर्माण की परिकल्पना की है। प्रस्तुत उपन्यास के जरिए 'पायल' यही कहना चाहती है कि "मैं किन्नर हूँ यही मेरा अस्तित्व है"।

सन्दर्भ सूची

1. 'मैं पायल' – महेन्द्र भीष्म, अमन प्रकाशन कानपुर (2016) पृ.26
2. वही, पृ.46
3. वही, पृ. 76
4. वही, पृ. 98
5. वही, पृ.82